ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
ओ३म्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

इस अंक का मूल्य : ५ रु०
वर्ष ४०, अंक ६
सोमवार ५ दिसम्बर, २०१६ से रविवार ११ दिसम्बर, २०१६
विक्रमी सम्वत् २०७३ सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११७
दयानन्दाब्द : १९३ वार्षिक शुल्क : २५० रुपये पृष्ठ १२
फैक्स : २३३६५९५९ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ओ३म् अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के अन्तर्गत

विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन

धनश्री, जिला- कार्बी आंगलांग (असम)

धनश्री में महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन का उद्घाटन

दीमापुर में दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के नए भवन का शिलान्यास पट्ट का अनावरण करते मुख्यमंत्री टी. आर. जेलिआंग, महामहिम राज्यपाल श्री पी.बी. आचार्य, महाशय धर्मपाल जी, श्री दीनदयाल गुप्त, जोगेन्द्र खट्टर एवं श्री धर्मपाल आर्य

महाशय धर्मपाल जी एवं अन्य अतिथियों का धनश्री रेलवे स्टेशन पर भव्य स्वागत

द्वार पर तिलक, पुष्प वर्षा एवं बुके भेंट कर हुआ अतिथियों का स्वागत

ओ३म् ध्वजों से सुसज्जित मार्ग, नव निर्मित विद्यालय का सुसज्जित मुख्य द्वार एवं बैंड द्वारा स्वागत

महाशय जी का तिलक एवं पुष्पगुच्छ द्वारा स्वागत

महामहिम राज्यपाल का आगमण : द्वार पर स्वागत एवं विद्यालय प्रधानाचार्य द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट

राज्यपाल जी ने दी महाशय जी के साथ यज्ञाहुतियां

शोभायात्रा के रूप में वैदिक धर्म की जय के नारों का उद्घोष करते हुए पहुंचे विद्यालय परिसर

उदबोधन एवं सम्मान

राज्यपाल श्री बनवारीलाल पुरोहित जी

श्री प्रकाश आर्य जी

श्री दीनदयाल गुप्त जी

श्री धर्मपाल आर्य

श्री हर्ष आर्य जी आर्य प्र.सभा असम

श्री शत्रुघ्नलाल आर्य एवं श्री लीला बोरा जी

श्रीमती पुष्पा पाहुजा जी

श्री सुधा गर्ग जी

महाशय जी से आशीर्वाद प्राप्त करते आचार्य सन्तोष जी, श्री पारीख जी एवं नागालैंड के कार्यकर्ता

विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन : 19–21 नवम्बर, 2016

असम के जनजातीय क्षेत्र में आर्यसमाज का इतना विशाल सम्मेलन भविष्य की खुशहाली का संकेत : आर्यसमाज शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक कार्य करे – बनवारी लाल पुरोहित, राज्यपाल असम

पूर्वोत्तर में शिक्षा क्रान्ति और संस्कार अभियान और गतिमान होगा : असम के सबसे पुराने केन्द्र में एक भव्य विद्यालय का निर्माण करेंगे : एक वर्ष में होगा विद्यालय तैयार – महाशय धर्मपाल

महाशय धर्मपाल जी ने 94 वर्ष की अवस्था में इतनी दूर आकर हमें बहुत उर्जा प्रदान की है : नागालैंड में आर्यसमाज के कार्यों की और अधिक आवश्यकता – पी. बी. आचार्य, राज्यपाल नागालैंड

आर्यसमाज करेगा पूर्वोत्तर में शिक्षा क्रान्ति का उद्घोष – प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

आर्यसमाज के छात्रावास के जनजातीय बालकों के मुख से वेद मन्त्रों का इतना शुद्ध उच्चारण सुनकर हृदय अभिभूत है – धर्मपाल आर्य

महाशय धर्मपाल जी ने इन क्षेत्रों में कार्य करने की जो प्रेरणा दी है वह हम सबके लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी – दीनदयाल गुप्त

विपरीत परिस्थितियों, विचारों की प्रतिकूल विचारधारा के वातावरण में जन और धन के अभाव में भी यदि अभूतपूर्व सबको आश्चर्यचकित करने वाला कोई कार्यक्रम सम्पन्न हो जाए तो उसकी प्रशंसा के लिए प्रत्येक शब्द छोटा पड़ जाता है।

यह एक कोरी कल्पना पर निर्मित विचार या जुमला नहीं अपितु दिनांक 19 से 21 नवम्बर 2016 को नागालैण्ड, असम में दयानन्द सेवाश्रम के माध्यम से आयोजित कार्यक्रम में यह चरितार्थ हुआ है। कार्यक्रम की भव्यता, व्यवस्था, सुन्दरता और गरिमामय मंच, अविश्वसनीय अपार जनसमूह की उपस्थिति यह सब कुछ अवर्णनीय हो गया।

अस्वस्थ होने के कारण न आ पाने का खेद है, पर कार्यक्रम की अद्भुत सफलता से अपार प्रसन्नता महसूस करता हूं – सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

पूर्वोत्तर में अपार कार्य करने की आवश्यकता और सम्भावना: काश! ये कार्य 100 वर्ष पूर्व आरम्भ किए गए होते : कभी बन्दूकों की आवाजों एवं आतंक का पर्याय रहे इस क्षेत्र में गूंज रहे थे भारत मां की जय के नारे एवं देशभक्ति के तराने

छोटे से छोटे आदिवासी नागरिक से लेकर प्रदेश के अनेक प्रतिष्ठित जन सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार एवं दोनों प्रदेशों के राज्यपाल, नागालैण्ड के मुख्यमन्त्री, शिक्षामन्त्री, विधायक, जाति व ग्राम के प्रमुख, सभी एकमत से कार्यक्रम को अभूतपूर्व बताते हुए आयोजकों की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की, दयानन्द सेवाश्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे।

1967 में आर्य नेता श्री पृथ्वीराज शास्त्री के प्रयासों से हुआ था दीमापुर के विद्यालय का शुभारम्भ : एम.डी.एच परिवार की ओर से एक स्कूल बस देने की घोषणा

ग्रामीण क्षेत्र दूर दराज से, वाहनों से तथा पैदल कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुष जिनमें अधिकांश नवयुवक-युवतियाँ और बालक बालिकाएं भी थीं।

अपने क्षेत्र से निकालकर प्रचार वहां करना होगा : जहां प्रचार का सर्वथा अभाव है : दिया जलाओ वहां बन्धुओं – जहां अभी अंधेरा है

आयोजन था महाशय धर्मपाल जी के सहयोग से धनश्री (असम) में लगभग 4 से साढ़े चार करोड़ की लागत से निर्मित विद्यालय का उद्घाटन और दीमापुर (नागालैण्ड) में छात्रावास और विद्यालय के नव निर्माण का शिलान्यास। साथ ही जनजाति वैदिक विराट सम्मेलन एवं शिक्षा, संस्कृति, छात्रावास की वृद्धि पर विचार एवं सहयोग।

जिस प्रयोजन को लेकर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, उसकी सफलता का जो अनुमान था उस अनुमान से कई गुना अधिक सफलता मिली। नागालैण्ड व असम को जो भेंट, सहयोग की दानी महानुभावों ने जो सौगात दी वह ऐतिहासिक उपलब्धि बन गई। इन तीन दिनों की सफलता, सक्रियता, चेतना और दानशीलता के साथ अदम्य उत्साह, नवचेतना का वर्णन होना संभव नहीं किन्तु कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर अपनी लेखनी से कुछ दर्शाने का प्रयास कर रहा हूं।

पूर्व निश्चयानुसार दिनांक 19/11/2016 करे दिल्ली, हरियाणा, मध्यप्रदेश, कोलकाता, पंजाब से बड़ी संख्या में आर्यजन जिनमें अनेक आशीर्वाददाता वृद्धजन कार्यक्रम के साक्षी बन वहां पहुंचे। कुछ व्यक्ति 18 की रात्रि में ही दीमापुर (नागालैण्ड) पहुंच गए थे। कार्य की सफलता हेतु कुछ दयानन्द सेवाश्रम संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता व पदाधिकारी 10 दिन पहले तैयारी हेतु पहुंच गए थे, इनमें आचार्य दयासागर, जीव वर्धन शास्त्री, सन्तोष शास्त्री और इनके कुछ सहयोगी थे। श्री जोगेन्दर खट्टर कार्यवाहक प्रधान दयानन्द सेवाश्रम संघ, श्री विनय आर्य, श्री नीरजजी आदि भी पूर्व में पहुंच गए व कार्यक्रम की सारी व्यवस्था की। श्री शिव कुमार मदान, श्री एस. पी. सिंह जी भी उपस्थित थे।

क्षेत्र में शिक्षा के विकास के लिए समयदानी महानुभाव कम से कम 20 दिन के समय हेतु अवश्य सम्पर्क करें

19/11/2016 को महाशय धर्मपालजी अध्यक्ष दयानन्द सेवाश्रम, श्री दीनदयालजी गुप्ता, (नार्थ ईस्ट क्षेत्र), श्री शत्रुघ्न जी, रांची (उपप्रधान), श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) तथा अनेक आर्यजनों के साथ मैं भी वायुयान के साथ दीमापुर (नागालैण्ड) पहुंचे। एयर पोर्ट पर सैकड़ों की संख्या में स्थानीय पहनावे में जन समुदाय उपस्थित था। करीब 1 घण्टे तक वहां महाशय धर्मपालजी का स्वागत किया गया।

एयरपोर्ट से नागालैण्ड में स्थित बोकाजान पहुंचे, वहां सायंकालीन भोजन व कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हजारों की संख्या में उपस्थित नागरिकों एवं विद्यालयों के छात्र छात्राओं, उनके पालकों की उपस्थिति में यह हुआ, तत्पश्चात् मंच से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बोकाजान में निर्मित भवन बहुत पुराना व जीर्ण स्थिति में है। सभी ने उस स्थान पर एक छात्रावास व विद्यालय की महती आवश्यकता बताते हुए उसके विस्तार व नवीनीकरण का महाशय धर्मपालजी से निवेदन कर सहयोग का प्रस्ताव रखा।

पूर्वोत्तर शिक्षा कोष की स्थापना : दानी महानुभावों से सहयोग की अपील

उदारमना, भामाशाह महाशय धर्मपाल जी ने अपनी उदारता व दानशील भावना का पुन: परिचय देते हुए एक बहुत सुन्दर भवन निर्माण का सहयोग देने की घोषणा की। यह भवन करोड़ों की लागत से बनेगा, पूरे क्षेत्र के विद्यार्थियों को इससे बहुत लाभ होगा, संस्कृति की रक्षा व विद्या की वृद्धि होगी।

दूसरे दिन प्रात: 9 बजे से धनश्री स्थित अति भव्य व विशाल विद्यालय भवन का जिसमें विद्यालय व छात्रावास दोनों का संचालन होगा उसका उद्घाटन होना था। साथ ही विराट जनजाति वैदिक सम्मेलन भी उसके पास ही दयानन्द सेवाश्रम की 160 बीघा जमीन पर आयोजित था। वहां विशाल पंडाल जिसमें 8 से 10 हजार व्यक्तियों की व्यवस्था थी, 100 × 40 फुट का विशाल मंच बना था।

आर्यजगत् के सहयोग से इस क्षेत्र में अद्भुत कार्य होगा – सम्मेलन में 10 हजार से अधिक महानुभावों की उपस्थिति ही इसका प्रमाण

आर्य समाज के इस क्षेत्र को सबसे बड़ी देन है माता प्रेमलता जी के सहयोग से इस क्षेत्र में आपराधिक कार्य में लिप्त अनेक व्यक्तियों ने इसी धनश्री के मैदान पर माताजी की उपस्थिति में शासन के समक्ष आत्म समर्पण किया था और अपने शस्त्र आदि भी जमा कर दिए थे, उसके पश्चात् उन्होंने उस अपमानित जीवन को त्यागकर समाज सेवा व अन्य कार्यों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। दल के प्रमुख श्री दिलीप मुनीषा एवं अमित मुनीषा। इस प्रकार 6 दलों ने सत्य मार्ग को अपनाया और आज वे आर्य समाज के सहयोगी हैं।

दीमापुर से ट्रेन द्वारा (दीमापुर से धनश्री का रास्ता अत्यन्त कष्टदायक उंचे-नीचे गड्ढ़ों वाला होने से) धनश्री रेल्वे स्टेशन पहुंचे।

वहां जो दृश्य था उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि क्षेत्र के पूरे आदिवासी ही कार्यक्रम में व महाशय धर्मपालजी के स्वागत के लिए एकत्रित हुए हैं, उनकी संख्या भी हजारों में थी। जब वहां से कार्यक्रम स्थल की ओर बढ़े तो लगभग 100 नवयुवक मोटर साइकिल पर ओ३म् पताका लगाए जयघोष करते हुए आगे-आगे चल रहे थे।

ओ३म् ध्वज से सजी खुली जीप में मुझे बैठाया गया, साथ में सुरेश मलिक सहित और कार्यकर्ता थे, हमारे पश्चात् 15 से 20 कारें, पैदल, सायकिल व जिससे जैसे आते बना एक बड़ा जुलूस धनश्री रेल्वे स्टेशन से नवनिर्मित भवन तक (लगभग 2 किलोमीटर) नारे लगाते हुए

नागालैंड के एकमात्र दयानन्द विद्या निकेतन दीमापुर के भवन का होगा पुनर्निर्माण – शिलान्यास सम्पन्न

– जारी पृष्ठ 5, 6, 7 एवं 10 पर

वेद-स्वाध्याय

ब्रह्मचर्य महिमा

इयं समित् पृथिवी द्यौर्द्वितीयोतान्तरिक्ष समिधा पृणाति।
ब्रह्मचारी समिधा मेखलया श्रमेण लोकाँस्तपसा पिपर्त्ति।। –अथर्व. 11/5/4
ऋषिः **ब्रह्मा**।। देवताः **ब्रह्मचारी**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ – **इयं समित्**=यह पहली समिधा **पृथिवी**=पार्थिव-जगत् की, **द्वितीया**=दूसरी समिधा **द्यौः**=द्युलोक की, आत्मिक जगत् की, **उत**=और वह **समिधा** =अपनी तीसरी समिधा द्वारा **अन्तरिक्षम्**=मध्य के मनोमय अन्तरिक्ष लोक को **पृणाति**=पूर्ण करता है। इस प्रकार **ब्रह्मचारी** = ब्रह्मचारी **समिधा** = समिधा से, त्रिविध दीप्ति से **मेखलया**=मेखला से, कटिबद्धता से **श्रमेण**=श्रम से और **तपसा**=तप से **लोकान्**=तीनों लोकों को, संसार के सब लोगों को **पिपर्ति**=पालित, पोषित और पूरित करता है।

विनय–यह संसार ब्रह्मचर्य से ही पालित, पोषित और पूरित हो रहा है। इस जगत् के आधार में यदि ब्रह्मचर्य का परमवीर्य न होता, तो यह जगत् कब का समाप्त, खाली और छूछा हो चुका होता, अपने शारीरिक वीर्य की, ब्रह्मतेज की और आत्मिक वीर्य (आत्मतेज) की रक्षा करनेवाले संयमी ब्रह्मचारी लोग ही हैं जो इस त्रिलोकी को निरन्तर जीवनतेज से पूरित कर रहे हैं। ब्रह्मचारी अपने शरीर को, अपने मन को, अपनी आत्मा (विज्ञानमय) को तीन समिधाएँ बनाकर बृहद् अग्नि (आचार्यग्नि या परमात्माग्नि) में रखता है, उसके अर्पण कर देता है। इसका फल यह होता है कि उसकी ये तीनों समिधाएँ प्रदीप्त हो जाती हैं–उसके शरीर में वीर्य का तेज आ जाता है, उसका मन ब्रह्म-तेज से समिद्ध हो जाता है और उसका आत्मा आत्मतेज से सूर्यवत् जाज्वल्यमान, प्रकाशित हो जाता है। शरीर की समिधा से वह स्थूल पृथिवीलोक को तृप्त और परिपूर्ण करता है, मन की दीप्ति से अन्तरिक्षलोक को पूरित करता है और आत्मप्रकाश से द्युलोक को। इस प्रकार से संसार का प्रत्येक सच्चा ब्रह्मचारी अपने इस संचित, रक्षित, त्रिविध तेज (समिधा) द्वारा इन तीनों लोकों को पालित कर रहा है। मेखला का अर्थ है सदा कटिबद्ध, तैयार, सावधान रहना। आलस्य, खाली रहने की इच्छा, शिथिलता, प्रमाद ब्रह्मचारी के घोर शत्रु हैं। इसी प्रकार खूब श्रम करना शरीर और मन से खूब काम लेकर इन्हें थका देने पर ही विश्राम ग्रहण करना–यह ब्रह्मचारी का धर्म है; आराम-पसन्द, कामचोर मनुष्य के भाग्य में ब्रह्मचर्य का सुख नहीं है। तप करना, सब द्वन्द्वों का सहना, गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, सुख-दुःख आदि को प्रसन्नतापूर्वक सहना–यह ब्रह्मचारी का तीसरा परमेश्वर व्रत है। कटिबद्धता, श्रम और पत के पालन द्वारा ही ब्रह्मचर्य में त्रिविध तेज का (वीर्य का) रक्षण और संचय होता है और इन्हीं तीन के लगातार अनुष्ठान द्वारा ही ब्रह्मचारी अपने इस तेज का उपयोग करता हुआ लोकों का (त्रिविध संसार का, संसार के लोगों का) पालन-पोषण और पूरण करता है। इन्हीं में ब्रह्मचर्य की अपार महिमा का रहस्य है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

बर्मा में बौद्ध दारुल बुद्ध हो गए

लगता है अपनी आस्था, उपासना के तौर तरीके बचाने का यह सबसे कठिन दौर है। हर जगह बहुसंख्यक समुदाय अल्पसंख्यकों पर हावी है। कठिन दौर इसलिए कि कुछ जगह छोड़कर हर जगह धार्मिक आस्था के चलते अल्पसंख्यकों को अपना देश छोड़ना पड़ रहा है। सिर्फ इसलिए कि उनकी पूजा, उपासना, उनके विवाह और सामाजिक जीवन में चली आ रही कुछ पुरातनकालीन मान्यताएं बची रह सकें। लेकिन आज लगता है विश्व का धार्मिक और राजनैतिक गठजोड़ एक नया समीकरण खड़ा कर रहा है जिनका साथ धर्मनिरपेक्षता का सिद्धांत मानने वाले अंदरूनी रूप से दे रहे हैं। यदि भारत से शुरू करें तो देखें आजादी के बाद से मुस्लिम और इसाई जैसे अल्पसंख्यक वर्ग के लोग राष्ट्रपति, फील्ड मार्शल और एयर चीफ मार्शल आदि जैसे देश के ऊंचे पदों पर विराजमान रहे हैं। यहां तक कि सबसे खराब साम्प्रदायिक तनाव के दौर में भी अल्पसंख्यकों को अपने घरों से पलायन नहीं करना पड़ा। कश्मीर ही इसका अपवाद है, जहां हिन्दू धर्म के लोग अल्पसंख्यक थे। घाटी का बहुसंख्यक मुस्लिम समुदाय अपने पड़ोसियों के इस धार्मिक पलायन का मूकदर्शक बना रहा, इसे छिपाने के लिए ही उन्हें हिन्दू नहीं बल्कि कश्मीरी पंडित कहा जाता है। हिन्दू बाहुल देश में इस पलायन को लेकर कोई विरोध प्रदर्शन नही हुआ क्योंकि मीडिया और सभी सरकारों ने हिन्दुओं पर ही इस पूरे प्रकरण का दोष मढ़ा और अफसोस शेष 'हिन्दू' भारत ने इस सिद्धांत को आसानी से मान भी लिया।

दूसरा इसका ताजा उदाहरण कैराना में सभी ने देखा। कथित धर्मनिरपेक्षवादी लोगों ने इस सच को भी राजनैतिक एजेंडा बनाकर इसकी गंभीरता को नष्ट कर दिया। बहरहाल संयुक्त राष्ट्र के एक अधिकारी ने कहा है कि बर्मा रोहिंग्या मुसलमानों का बड़े पैमाने पर सफाया कर रहा है। लेकिन रोहिंग्या मुसलमानों पर हो रहे इस भयानक अत्याचार पर पूरी दुनिया चुप है। हालाँकि बांग्लादेश की राजधानी ढाका में हजारों मुसलमानों ने रोहिंग्या मुसलमानों के समर्थन में प्रदर्शन किया है। इस पर शकील अख्तर लिखते हैं कि इसी बांग्लादेश में कट्टर मुस्लिमों के द्वारा चलाये जा रहे हिन्दुओं के दमन चक्र पर कोई मुस्लिम बाहर नहीं आया जिस धार्मिक भेदभाव और नफरत के कारण 1964 से 2013 तक एक करोड़ तेरह लाख हिंदू बांग्लादेश छोड़ चुके हैं। औसत 630 हिंदू रोजाना बांग्लादेश से कहीं और पलायन कर रहे हैं। पाकिस्तान में भी धार्मिक अल्पसंख्यकों को भेदभाव और घृणा का सामना करना पड़ता है। हजारों हिन्दू हर साल देश छोड़ कर दूसरे देशों का रुख कर रहे हैं। पाकिस्तान में ये दुखद पहलू न चर्चा का विषय है और न ही यह देश की अंतरात्मा को झकझोरता है। देश के सुन्नी चरमपंथी संगठनों ने बीते कई दशकों से अल्पसंख्यक शिया समुदाय को धार्मिक तौर खत्म करने की अघोषित मुहिम चला रखी है। शिया मस्जिदों, स्कूल, इमामबाड़ों, यहां तक कि तीज-त्योहार भी चरमपंथियों के निशाने पर हैं। देश के दूसरे अल्पसंख्यक समुदाय अहमदिया को न केवल काफिर करार दिया गया बल्कि उनकी आस्था ही अक्सर उनकी मौत की वजह बन जाता है।

बीबीसी न्यूज के हवाले से पता चला कि 2014 में अमरीकी शोध संस्था पिउ रिसर्च सेंटर के एक अध्ययन के मुताबिक दुनिया भर में मजहब की वजह से पैदा होने वाले सामाजिक तकरार में बढ़ोतरी हुई है। इस शोध में विश्व के 198 देशों को आधार बनाया गया था और इसमें साल 2007 से 2012 के आंकड़ों को शामिल किया गया। शोध में पाया गया कि इनमें से अब एक तिहाई मुल्क ऐसे हैं जहां धर्म के आधार पर पनपा सामाजिक विद्वेष बढ़ा है। साल 2011 में ऐसे देशों या क्षेत्रों की संख्या महज 29 फीसदी थी। शोध में ये भी पाया गया कि कई क्षेत्र जैसे यूरोप के कुछ ऐसे मुल्क हैं जहां धर्म पर लगाई गई सरकारी पाबंदी में भी इजाफा हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी वाले मुल्कों में पाकिस्तान, बर्मा, मिस्र, इंडोनेशिया और रूस में लोगों को साल 2012 में सबसे ज्यादा धार्मिक विद्वेष का सामना करना पड़ा। मजहबी विद्वेष की वजह से औरतों को निशाना बनाये जाने के मामले में चीन का भी जिक्र हुआ है जहां चंद मुस्लिम औरतों के नकाब को मुंह से नोच लिया गया।

बीसवीं शताब्दी ने अनेक साम्राज्यों को नष्ट होते देखा, साथ ही धरती पर अनेक नए देशों को जन्म लेते हुए भी, इस उथल- पुथल ने कुछ ताकतों को अल्पसंख्यक से बहुसंख्यक बना दिया और बहुसंख्यकों को अल्पसंख्यक में तब्दील कर दिया। म्यांमार की सेना द्वारा रोहिंग्या मुसलमानों के खिलाफ अभियान को देखकर मुस्लिम समुदाय के कुछ लेखक, बुद्धिजीवी लोग इस मामले को लेकर दबी जुबान से ही सही पर मुखर हैं और मानवीय दृष्टि से होना भी चाहिए लेकिन इनकी कलम तब कहां गुम हो गयी थी जब सिगरेट के भाव यजीदी समुदाय की बच्चियां बेचीं जा रही थीं। क्या इन लोगों ने केशर की ''क्यारी''(कश्मीर) को 90 के दशक में छिन्न-भिन्न होते नही देखा! आज बुद्ध का कंधार कहां है? कहाँ है सिखों का ननकाना, कहाँ है हिंगलाज? इस तरह कहा जा सकता है कि कौन सा समूह कब अल्पसंख्यक बन जायेगा और कब बहुसंख्यक का रूप धारण कर लेंगे, कुछ नहीं कहा जा सकता।

हर तरफ वातावरण में एक बेचैनी सी है। जो लोग इस समय को भौतिक युग समझ रहे है वे समझते रहें, लेकिन सच यह है कि यह दौर धार्मिक हिंसा से भी अछूता नहीं है। बलपूर्वक धर्म का नाम लेकर हर जगह अल्पसंख्यकों के रोजगार उनके मकान और बहू-बेटियों की इज्जत लूटी जा रही है। इस कृत्य को कुछ इस तरह रंग दिया जा रहा है कि स्थानीय स्तर पर लोग इसे जायज ठहराने और चंदा देने में भी संकोच नहीं बरतते। इस्लाम में ''दारुल हरब और दारुल इस्लाम'' नामक शब्दावली है, इसका मतलब सब समझते हैं और अधिकतर मुस्लिम समाज के लोग इस शब्दावली को मान्यता भी देते हैं। मुझे नहीं पता इस प्रसंग को यहाँ रखना कितना उचित है किन्तु मेरे नजरिये से यह प्रासंगिक होता है क्योंकि जब अन्य मत के लोग अपनी धर्म की रक्षा के लिए, अपनी बहू-बेटियों के सम्मान के लिए, दारुल बौद्ध या दारुल हिन्दू होते हैं तो इसे साम्प्रदायिकता क्यों कहा जाता है? आशा है मुस्लिम विचारक समाज को बाँटने वाली ऐसी विचारधारा का भी विरोध करें। धर्म अब शांति प्यार और सद्भाव का नाम नहीं रहा, यह घृणा, हिंसा और भेदभाव का आधार बन चुका हैं। अरब से चले कट्टरपंथी धार्मिक उन्माद और धार्मिक उग्रवाद की भावना ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया है। नफरतों का यह सिलसिला उस समय तक जारी रहेगा जब तक इनके मजहबी रहनुमा धार्मिक गद्दियों से उतरकर मानवता की कतार में नहीं आते।

–*सम्पादक*

वैदिक शगुन लिफाफे
महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा - दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं उत्तर पूर्व के कार्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत उसकी सेवा इकाई के रूप में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की स्थापना आदिवासी एवं जनजातीय क्षेत्रों में सेवा एवं शिक्षण कार्य को आगे बढ़ाने के लिए हुई। दयानन्द सेवाश्रम संघ के पूर्वोत्तर में वर्तमान में 5 विद्यालय एवं 7 होस्टल संचालित हैं। इन कार्यों की शुरुआत 1967 में पृथ्वीराज जी शास्त्री, ओम प्रकाश त्यागी के विशेष प्रयासों से हुई थी। पृथ्वी राज शास्त्री के पश्चात् इन कार्यों को माता प्रेमलता शास्त्री जी ने संभाला और मृत्युपर्यन्त 90 वर्ष की आयु तक निभाया। उन्होंने अखिल भारतीय प्रधान के रूप में जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए महाशय धर्मपाल जी से निवेदन किया जिसे उन्होंने स्वीकार किया तथा उनके आशीर्वाद से इस क्षेत्र में कार्यों को तीव्र गति मिली। महाशय जी ने ही पूर्वोत्तर के दयानन्द सेवाश्रम संघ के अध्यक्ष के रूप में श्री दीनदयाल गुप्त जी से निवेदन किया और उपप्रधान के रूप में श्री शत्रुध्न लाल आर्य जी को जिसे उन्होंने स्वीकार किया तथा अब वहां पर इन शिक्षा कार्यों में और अधिक गति लाने की सम्भावनाएं हैं और अनेक महानुभावों ने इस क्षेत्र में प्रचार और शिक्षा की आवश्यकता को देखते हुए सहयोग देने का संकल्प लिया है।

धन के सहयोग के साथ-साथ यदि आप अपना समय दान दे सकें जैसे-शिक्षा से जुड़ी बहनें यदि ग्रीष्म कालीन अवकाश में अपना एक महीने का समय वहां शिक्षा के कार्यों में दे सकें तो ये एक बहुत महत्त्वपूर्ण सहयोग होगा। कुछ महानुभावों ने अपना समय देने का संकल्प किया भी है, सन् 2017 में हमें हर महीने अच्छे शिक्षकों की आवश्यकता है। यदि कुछ महानुभाव समय दे सकें तो कृपया 9810040982 बतावें किस महीने में समय दे सकते हैं, लिख देवें। हम उनसे सम्पर्क करेंगे। रेल से आने-जाने और वहां निवास भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से होगी केवल स्वस्थ-शिक्षक किसी विषय विशेष- सांईस, मैथ्स्, अंग्रेजी पढ़ाने की योग्यता और सेवा के इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें। न्यूनतम प्रवास 20 दिन (आने-जाने का समय सहित) होगा तो ही पूर्ण उपयोगी होगा।

तीन दिवसीय विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन की मुख्य झलकियां

पहला दिन स्वागत एवं बोकाजान आश्रम (असम)

- ★ दीमापुर एयरपोर्ट (नागालैंड) पर हुआ अभीभूत करने वाला स्वागत
- ★ दीमापुर की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि पहुँचे थे एयरपोर्ट पर नागा एवं स्थानीयं वेश भूषा में लोग ढौल नगाडो सजे हुए ओ३म् के झण्डो से पटा था एयरपोर्ट
- ★ पूरे रास्ते में कार्यक्रम के होर्डिंग, स्वामी दयानन्द जी और महाशय जी के बड़े चित्र थे।
- ★ बोकाजान आश्रम (आसाम) में पहुँचते ही सैकड़ों स्थानीय महानुभावों एवं बच्चों ने किया पुष्पों से स्वागत
- ★ बोकाजान में एक बडा विद्यालय बनाने की घोषणा, महाशय धर्मपाल एम. डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन बोकाजान आसाम रखा जाएगा नाम
- ★ दीनदयाल गुप्ता बालक छात्रावास एवं शिवकुमार चौधरी कन्या छात्रावास के पुनरुद्धार एवं नव निर्माण कार्य पूर्ण।
- ★ महाशय धर्मपाल जी को एक झलक पाने को बेताब दिखा प्रत्येक व्यक्ति
- ★ तीन दिन-तीन स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में क्षेत्र के लगभग दीमाशा, कार्बी, कछारी, नेपाली, नागा, बंगाली, आसमी आदि 15 प्रमुख जननजातियों की रही भागीदारी
- ★ जहां आर्य समाज का मजबूत संगठन नहीं है वहां महामहिम राज्यपाल आसाम एवं राज्यपाल नागालैण्ड एवं नागालैण्ड के मुख्य मन्त्री एवं शिक्षा मन्त्री ने पधारकर आर्य समाज के संगठन को दी अहमियत

दूसरा दिन-धनश्री (असम)

- ★ धनश्री रेलवे स्टेशन पर कम से कम 1000 लोग उमड़ पड़े स्वागत करने हेतु।
- ★ स्टेशन पर प्लेट फार्म न होने की वजह से बनाई गई थी टैम्परेरी सीढी की व्यवस्था जो स्थानीय लोगों के लिए आकर्षण का विषय रहा
- ★ धनश्री रेलवे स्टेशन-धनश्री गांव एवं विद्यालय तक के पूरे मार्ग होर्डिंग पोस्ट व ओ३म् के झण्डों से पटे थे
- ★ सौ से अधिक मोटर साईकिलें, खुली जीप और कारों के काफिले के साथ पहुँचे विद्यालय भवन तक
- ★ विद्यालय भवन को जिस तरह से फूलों व गुब्बारों से सजाया गया था वह नजारा देखते ही बनता था
- ★ राज्यपाल महोदय एवं महाशय धर्मपाल जी ने यज्ञ में आहुति देकर भवन का उद्घाटन किया।
- ★ विद्यालय से हजारों लोगों का काफिला -वैदिक महासम्मेलन आयोजन स्थान (400 मीटर दूर) की ओर चला तो रास्ते के दोनों और ओ३म् ध्वज ही ओ३म् ध्वज और वन्दे मातरम् एवं भारत माता की जय के नारे लग रहे थे
- ★ विशाल पंडाल लगभग 10000 लोगों के बैठने की व्यवस्था 40×80 फुट का विशाल सुसज्जित मंच देखने योग्य था लग ही नहीं रहा था कि यहां आर्यसमाज का विशाल कार्यक्रम इन जंगलों में होने जा रहा है।
- ★ स्थानीय वेश भूषा में अलग-2 जनजातियों द्वारा अपनी भाषाओं में लोक गीतों की प्रस्तुति अत्यंत मनमोहक थी
- ★ दयानन्द विद्या निकेतन के बच्चों ने भी ईश्वर भक्ति के गीत एवं देशभक्ति गीतों को प्रस्तुत किया।
- ★ सभी बाहर से पधारे अतिथियों का स्वागत स्मृति चिन्ह देकर किया गया
- ★ हजारों लोगों के लिए भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई थी
- ★ अधिकतर लोगों का कहना था ''न तो सोचा था कि ऐसा भवन होगा और न ही कल्पना की थी कि इन जंगलों में इतना भव्य सम्मेलन होगा

तीसरा व अन्तिम दिन दीमापुर (नागालैंड)

- ★ अन्तिम दिन 21 नवम्बर को प्रातः ही दीमापुर विद्यालय भवन का शिलान्यास समारोह था जिसमें नागालैंड राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री पी. बी. आचार्य एवं मुख्यमन्त्री श्री टी. आर. जेलिआंग, शिक्षामन्त्री श्रीमान यिटाचु सम्मिलित हुए।
- ★ नागा जनजाति के सांस्कृतिक कार्यक्रम दीमापुर के विद्यालय द्वारा प्रस्तुत किए गए
- ★ पूर्वोतर आर्य शिक्षा कोष बनाने की घोषणा की गई कुछ महानुभावों ने अपनी-2 सहयोग राशि इस हेतु संकल्पित की
- ★ महाशय धर्मपाल जी ने दीमापुर विद्यालय को एक स्कूल बस भेंट करने की घोषणा की तथा श्री सुरेशचन्द आर्य जी ने श्री दीनदयान गुप्ता जी एवं श्री धर्मपाल आर्य जी ने एक जीप भेंट करने का संकल्प व्यक्त किया
- ★ कुल मिलाकर व्यवस्था, उपयोगिता, भव्यता, आवश्यकता, भविष्य की जरूरत की दृष्टि से ये तीन दिवसीय आयोजन अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ
- ★ जो महानुभाव आर्य समाज के इस क्षेत्र में हुए इस कार्यक्रम को देख नहीं सके निश्चित रूप से मैं ये कह सकता हूँ कि वे आर्य समाज के पूर्वोत्तर के इतिहास के प्रत्यक्षदर्शी होने से वचिंत रह गए भविष्य में एक बार अवश्य जाने का कार्यक्रम बनाएं। इस कार्यक्रम जैसी संख्या/भीड़ व उत्साह तो नहीं लेकिन आर्य समाज के कार्य एवं उस क्षेत्र को हमारी और आपकी जरूरत अवश्य देखने को मिलेगी।

-विनय आर्य,
महामन्त्री, दिल्ली सभा

इस कार्यक्रम को यू ट्यूब के आर्यसमाज के चैनल पर देखें अथवा नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें

https://www.youtube.com/watch?v=EKejeFS7Kt0

उत्तर-पूर्वांचल विशाल जनजाति वैदिक सम्मेलन

....जहां 'भारत से आए हो?' ये पूछा जाता था वहां 'भारत माता की जय' और 'वन्दे मातरम्' के नारे लग रहे थे, यह बदलाव का एक सुखद एहसास था।......

- डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी

"उत्तर-पूर्वांचल बदल रहा है।"

कुछ लोग चाहे न माने पर आम आदमी देख रहा है कि भारत बदल रहा है। धीरे-धीरे विश्व गुरु व विश्वमहाशक्ति बनने की भविष्यवाणियां सच होने का लक्षण दिख रहा है। देश के साथ ही देश का सेवन सीष्टर्स के नाम से विख्यात उत्तर-पूर्व का अंचल भी बदल रहा है। आज से चार वर्ष पूर्व वहां की भयावह स्थिति जो मैंने देखी थी वह आश्चर्यचकित कर देने वाली थी। तुम भारत से आये हो ऐसा प्रश्न वहां मैंने सुना। नागालैण्ड, अरुणाचल में प्रवेश हेतु अनुमति पत्र लेना पड़ता था। हम भारतीयों को जैसे अमेरिका, चीन, जापान हेतु वहां की सरकार से वीजा लेना पड़ता है। नागलैण्ड के प्रमुख व्यवसायी शहर दीमापुर में एयरपोर्ट पर उतरने से पहले हवाई जहाज से ही एक केसरिया झण्डा किसी मकान पर देखकर मुझे बड़ा सुखद आश्चर्य हुआ। चार साल पहले जब मैं यहां आया था तब चार दिनों तक भगवा झण्डा तो क्या भगवा कपड़े या भगवा दुपट्टा वाला भी कोई नहीं मिला था। चारों तरफ हर थोड़ी दूरी पर कोई न कोई छोटा बड़ा विशाल चर्च अवश्य था। इसलिए किसी मकान पर भगवा झण्डा देखना बड़ा आश्चर्यजनक था। पर बाद में जमीन पर आने पर पता चला कि ये तो मेरे को लेने आयी टाटा सूमो पर लगी झण्डी थी। दीमापुर हवाई अड्डे से धनसीरी गांव 25-30 कि.मी. दूर है। पर रास्ता पहले की तरह बहुत खराब था तथा वहां पहुंचने में हमें दो घंटा लगा। धनसीरी आसाम में आता है। नागालैण्ड की 16 जनजातियों में से एक दिमाशा का क्षेत्र है। जहां दूसरे नागा 90 प्रतिशत नागा ईसाई बन गये हैं, वहां दिमाशाओं का बहुमत अभी भी हिन्दू है। इस क्षेत्र में आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं तथा सेवाश्रम के प्रयासों से 800 से अधिक दिमाशा आतंकवादियों ने आत्म समर्पण कर दिया है। तब उन्होंने अपने बच्चों के लिये एक विद्यालय की मांग की थी। दूसरी जनजाति के लोगों से अपनी रक्षा के लिये उनके कुछ लोग अभी भी सशस्त्र हैं। जनजाति वैदिक सम्मेलन के आयोजन में इसलिए आसपास के गांव से धनसीरी में करीब 10 हजार से अधिक जनजाति के लोग आये थे। असम के राज्यपाल श्री बनवारीलाल पुरोहित तथा एम.डी.एच मसाले के 94 वर्षीय महाशय धर्मपाल जी सम्मेलन में आये। इस अवसर पर जनजाति के बालकों को संस्कार के साथ अच्छी उच्चस्तरीय शिक्षा देने के लिए सीबीएससी से सम्बन्धित दिल्ली के प्राईवेट स्कूल जैसा एम.डी.एच. डी.ए.वी. विद्यालय खोला है। लगभग 4 करोड़ से निर्मित इस विद्यालय के भवन का उद्घाटन भी इस अवसर पर किया गया। चार साल पहले इस भवन के भूमिपूजन पर यहां जंगल था जिसमें एक ब्रह्मचारी 15 बालकों को पढ़ा रहे थे। तब 15 बालकों, शास्त्री जी व मेरे साथ आये भिलुड़ा निवासी श्री मोहनलाल सूत्रधार व दिल्ली से भवन निर्माण हेतु आये। इंजीनियर आर्यबन्धु श्री नारंग साहब हम 20 लोगों ने भारतमाता की जय व कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का नारा लगाया था। आज उसी जगह यज्ञ केउपरान्त करीब 10,000 लोगों ने भारतमाता की जय बोला। यहां लगभग भगवे रंग की 100 पताकायें भी फहरा रही थीं। लगा अच्छे दिन आ रहे हैं। अंधेरा 5 बजे से ही हो जाता है। शाम को धनश्री (आसाम) से वापस दीमापुर नागालैण्ड उसी खराब रास्ते पर आते समय नागाओं का भय टाटासूमों के सभी साथियों के मन में था। रात होटल में ठहरे। होटल अच्छा था। स्टाफ स्थानीय था अंग्रेजी के साथ हिन्दी भी समझता था। कमरे में एक बाईबिल भी थी। मुझे लगा कि ईसाई होटल मालिक ने जैसे बाईबिल रखी है। वैसे ही गीता-रामायण मानने वाले होटल मालिक हर ग्राहक के कमरे में खाली समय में पढ़ने को गीता, रामायण या उपनिषद् की प्रति रखें तो कितना अच्छा होता। श्री रमाशंकर जी शास्त्री कानपुर के रहने वाले हैं तथा पिछले कई वर्षो से जान हथेली में रखकर श्री सन्तोष आर्य के सहयोग से इस विद्यालय का संचालन कर रहे हैं तथा वैदिक व राष्ट्रीय भारतीय संस्कारों का प्रचार कर रहे हैं। 21 की प्रात: नागालैण्ड के मुख्यमंत्री श्री जेलिआंग समय से पूर्व 9 बजे ही आ गये । काफी देर बैठे। समारोह में अपने बजाय शिक्षामंत्री को भी भेजा। गवर्नर श्री पी.बी आचार्य बम्बई विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर मोदी सरकार में नियुक्त हुए अत्यन्त विद्वान् सज्जन हैं।

नागालैण्ड में भारतीय सांस्कृतिक माहौल पहली बार देखकर भारतमाता की जय, स्वामी दयानन्द सरस्वती की जय सुनकर अत्यन्त खुश हुए। मेरे द्वारा वन्दे बोलने पर उन्होंने भी हाथ उठाकर मातरम् बोला। पति-पत्नी दोनों ने यज्ञ में आहुति दी। बहुत ही विद्वतापूर्ण भाषण में उन्होंने कहा कि 40 लाख की आबादी में 5 विश्वविद्यालय हों तब भी नागालैण्ड अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। शिक्षा संस्कार युक्त हो तथा आदमी में कौशल का विकास करें। शिक्षामंत्री ने अंग्रेजी में बोलते हुए कहा कि मैं अंग्रेजी में बोलने में बड़ा एम्ब्रेसमेन्ट महसूस कर रहा हूं। अभी हमारे शिक्षा विभाग के कुछ अधिकारी तथा छात्र चीन की शैक्षणिक यात्रा पर गये थे, चीन के हिन्दी शिक्षकों व छात्रों ने जब उनसे हिन्दी में बात करनी चाही तब हिन्दी न आने से उन्हें भी बड़ा खराब लगा। अब हम सब नागालैण्डवासी हिन्दी सीखेंगे।

- शेष पृष्ठ 9 पर

दयानन्द सेवाश्रम संघ बोकाजान के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंचस्थ अधिकारी एवं कार्यकर्ता

दयानन्द विद्या निकेतन दीमापुर के बच्चों के साथ महाशय धर्मपाल जी

महासम्मेलन के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर प्रचारार्थ लगाए गए होर्डिंग्स

पृष्ठ 3 का शेष

चल रहा था। हर कोई बड़े आश्चर्य से इस भव्य शोभायात्रा को देखकर उसी वातावरण में रंग जाता, भारत माता की जय, वन्दे मातरम्, आर्य समाज के नारे लगाने लगता।

पूरे 2 किलोमीटर में सैकड़ों ओ३म् ध्वज बैनर महाशय जी के अभिनन्दन के फ्लेक्स, स्वागत द्वार लगे हुए थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे पूरा क्षेत्र आर्य समाज मय हो गया है।

महामहिम राज्यपाल श्री पी. बी. आचार्य, ठीक समय पर विद्यालय परिसर में पधारे। वहां यज्ञ में बैठकर आहुति दी व भवन का उद्घाटन किया। फिर वहां से चलकर कार्यक्रम स्थल पर पहुंचे।

सर्वप्रथम सबका प्रान्त की व आदिवासी परम्परा के अनुसार स्वागत किया। कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा मन्त्री की ओर से (मेरा) उद्बोधन, आर्य समाज, राज्यपाल महोदय का परिचय, तथा गतिविधियों पर हुआ। महाशय धर्मपालजी ने आशीर्वचन के साथ दो घोषणाएं और की। पहली घोषणा सत्र 2017 जो जनवरी से प्रारंभ होता है उसमें प्रवेश लेने वाले किसी भी छात्र से प्रवेश शुल्क नहीं लिया जाएगा। दूसरी घोषणा विद्यालय में विद्यार्थियों को लाने ले जाने की सुविधा हेतु एक और स्कूल बस प्रारंभ की जाएगी।

इस घोषणा से उपस्थित हजारों की संख्या में स्थानीय नागरिकों ने प्रसन्नता से ताली बजाकर महाशय धर्मपाल की जय के नारों से पण्डाल गुंजा दिया। श्री दीनदयाल जी गुप्ता तथा धर्मपालजी आर्य ने भी अपने उद्बोधन में पूर्ण सहयोग करने व दूसरों को भी आगे आने की अपील की।

महामहिम राज्यपाल श्री बनवारीलाल जी पुरोहित द्वारा अत्यन्त प्रभावी, सार्थक व मार्मिक उद्बोधन देते हुए आर्य समाज के कार्यों की महर्षि दयानन्द जी के प्रयास की प्रशंसा की। ऊंच-नींच के भेदभाव को समाप्त करने हेतु विद्या के प्रचार हेतु कुरीतियों को नष्ट करने हेतु आर्य समाज का महत्त्व बताते हुए आप उसके प्रयासों की ओर आवश्यकता है, कहा। विद्या के संस्कार व संस्कृति होना चाहिए। एक अच्छी शिक्षा ही धर्म, संस्कृति व राष्ट्र की रक्षा कर सकती है। यह जब इस

- शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 6 का शेष

पूर्वोत्तर की सभी संस्थाओं के कार्यों के समन्वय के लिए श्री सुरेशचन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, एवं श्री धर्मपाल आर्य जी द्वारा एक वाहन देने का संकल्प

नागालैंड की उन्नति के लिए हिन्दी को अंग्रेजी जैसा स्थान देना ही होगा - शिक्षामन्त्री, नागालैंड

महामहिम राज्यपाल श्री बनवारी लाल पुरोहित जी को स्मृति चिह्न एवं विश्व के प्राचीनतम धर्मग्रन्थ वेद का सैट भेंट करते महाशय धर्मपाल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री दीनदयाल गुप्त जी एवं श्री प्रकाश आर्य

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ पूर्वोत्तर के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्त जी जी को स्मृति चिह्न भेंट

विराट जनजातीय वैदिक महासम्मेलन के अवसर पर उपस्थित अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं को स्मृति चिह्न भेंट करते महाशय धर्मपाल जी एवं श्री दीनदयाल जी - भूमि दानदाता श्री गंगा लथ्थासिया, डी.एस.डी. चेयरमैन श्री दिलीप मुनीसा, श्री संजीव भारद्वाज (एम.डी.एच.), श्री अनिल टंडन (एम.डी.एच.), श्री एस. मुखर्जी (एम.डी.एच.)

श्री देवेन्द्र दहिया जी, श्री रमेश आर्य जी, श्री गोविन्दलाल अग्रवाल जी, श्री नरेन्द्र नारंग जी, श्रीमती एवं श्री राजपाल पोपली एवं माता ईश्वर रानी जी

श्रीमती गीता जी (एम.डी.एच) श्रीमती आदर्श भसीन श्रीमती उमा मोंगा जी श्रीमती वीणा आर्या जी श्रीमती सुशीला कपूर जी श्रीमती आशा त्यागी जी श्रीमती अंजली कपूर जी

विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाशआर्य जी एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य

दाएं से - महाशय जी की सुपुत्री श्रीमती प्रतिभा खनिजो, दामाद श्री अशोक खनिजो एवं सुपुत्री किरण ग्रोवर

श्री शिव कुमार मदान

श्री रामलाल आहुजा

विद्यालय में होगा, ऐसा करना चाहिए यह एक बहुत बड़ा कार्य इस क्षेत्र में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दयानन्द सेवाश्रम आर्य समाज के द्वारा किया गया है, इस हेतु सबको धन्यवाद।

कार्यक्रम को स्थानीय विद्यालय व अन्य राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी संबोधित करते हुए सहयोग प्रदान करने की घोषणा की।

कार्यक्रम में उसी क्षेत्र के बालक-बालिकाओं द्वारा जिनमें से कुछ दिल्ली में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, सुन्दर नृत्य एवं नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसे देख अपार हर्ष का वातावरण बना। कार्यक्रम में बाहर से पधारे आर्यजनों का स्वागत किया व कार्यक्रम का संचालन श्री विनय आर्य, श्री जोगेन्दर खट्टर ने किया।

तीसरे दिन सुबह 10 बजे दीमापुर स्थित भवन (विद्यालय, छात्रावास) का पुनरोद्धार हेतु शिलान्यास किया जाना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री पी बी आचार्य के कर कमलों से हुआ। इसके पूर्व आपने सपत्नीक यज्ञ किया।

माननीय राज्यपाल सपत्नीक श्रीमती कविता आचार्या के साथ पधारे। साथ ही शिक्षा मन्त्री श्री यिटाचु, नागालैण्ड तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी भी पधारे। प्रारम्भ में परम्परागत रूप से अतिथिगण का स्वागत किया।

कार्यक्रम में उद्‌बोधन हेतु मुझे आमन्त्रित किया गया। इसके पश्चात् अखिल भारतीय दययानन्द सेवाश्रम संघ नार्थ ईस्ट के प्रधान श्री दीनदयालजी गुप्ता

- शेष पृष्ठ 10 पर

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Om : The Mystic Name of God

The Supreme Self is addressed by numerous names, each referring to a particular function or nature of the indescribable God. Yajurveda (XXXII.1) speaks of Him as Agni (The Adorable), Aditya (Infinite), Vayu (pervading and Vital), Sukram (Primeval Seed) and in various other terms. God came to be popularly known as Prajapati, Atman, and Brahman in the Brahmanical and Upanishadic Texts. Much later in the Puranic period, names like Visnu, Siva, Isvara etc. became popular. But "OM" in itself embraces all the attributes of the Lord. Its popularity has no accountable history. By Om only God is signified whereas all other names like Agni, Visnu, Siva may mean other objects as well. Om is indeclinable (avyaya) having no change in number, gender, person or case. In OM (A+U+M): A (अ) is the first letter of the phonetic alphabet; U (उ) is the last phonetic pure vowel, M (म्) is the last letter and all the three together are the integral limits of sounds which we use in our language. A=Supreme Self, U=Lower Self, M=Primordial Nature. O sacrificer, meditate on Om, the All-Pervader and All-Protector Lord. This mystic name of God is recommended to be used in the beginning of every verse and at the end of it in the Vedic Texts. Om is also known as Pranava and Udgitha.

ओ३म् क्रतो स्मर।। (Yv. XL.15)

Om krato smara..

What He is and what He is not

Defining God is beyond the limited knowledge of man. God's power and glory are infinite and hence they elude the grasp of human mind. However, human thought is convinced that only He is the architect of the creation, sustenance and dissolution of the Universe. Divine acts like conferring reward or punishment for the actions of man and revelation of the Source Knowledge, the Vedas, for the guidance of mankind cannot be comprehended even by the great souls. God's knowledge is absolute and impeccable. But it is wrong to think that the Almighty God is capable of doing anything arbitrarily that He can create the world out of nothing, that He can liquidate Himself or that He can create another God. Because He is the Supreme Upholder of the eternal laws formulated by Him, His every action is governed by such laws.

Chapter XL, verse 8 distinctly mentions what He is and what He is not:

"He is all-pervasive, pure, omniscient, Supreme Self farsighted, wise surpassing all and self-existent. He creates the objects in all propriety for all times to come." This version makes out what God is.

"He is bodiless, without wound, without sinew, faultless and unpolluted by sin." This version explains what God is not.

स पर्यगाच्छु क्रमकायमव्रण मस्नाविरँ शुद्धम पापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतो ऽ र्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः। (Yv. XL.8)

Sa paryagacchukramakayama vrana masnaviram suddhamapapa viddham.
kavirmanisi paribhuh svayambh uryatha tathyato rthan vyadadha cchasvatibhyah samabhyah..

We invoke You for food, we invoke You for vigour.

While the poetic Rigveda, the first Text of the Source Book of revealed knowledge, begins with a verse expressing reverential salutations to the Creator and Protector of the endless cosmic creation of the mysterious Universe, the opening words of the next divine Text, Yajurveda which states divine formulae for excelent performances (Yajna) starts with spontaneous invocation for food, vigour and sound body organs. This is natural as true knowledge achieves fruition when applied for individual and social development. Noble action demands a sound body and a firm mind.

"We invoke you, O Creator Lord, for our food. We invoke you for our vigour. May we have honest desires and also adequate strength to get success. O inner selfs, may the Merciful God depute you for the noblest accomplishment. May He invigorate your body organs keeping them free from defects and diseases. O organs of the body, be not a prey to evil temptations. May the Soul, your master, protect you for attainment of prosperity and eternal bliss."

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्याय ध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽईशत माथशँसो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यज मानस्य पशून् पाहि।। (Yv. I.1)

Ise tvorje tva vayava stha devo vah savita prarpayatu sresthatmaya karmana apyayadhvamaghnya indraya bhagam prajavatiranamiva ayaksma ma va stena isata maghasamsodhruva asmin gopatau syata bahviryajamanasya pasunpahi..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

MDH **हवन सामग्री**
मात्र 90/- किलो
(5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1
मो. 9540040339

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 17 (अ)

उप पद चतुर्थी विभक्ति

गतांक से आगे....

१.नमः - नमस्कार करना
गुरवे नमः।
गुरु जी को नमस्कार है।

२.स्वस्तिः - कल्याण
सर्वेभ्यः स्वस्ति।
सबका कल्याण हो।

३.स्वाहा - आहुति
अग्नये स्वाहा।
अग्नि के लिए आहुति है।

४.क्रुध - क्रोध
रामः रावणाय क्रुध्यति।
राम रावण पर क्रोध करते हैं।

५.द्रुह - द्रोह करना
विभीषणः रावणाय अद्रुह्यत।
विभीषण ने रावण से द्रोह किया।

६.दा - देना
अहम् निर्धनाय दानं ददामि ।
मैं गरीबों को दान देती हूं।

७.ईर्ष्य - ईर्ष्या जलन करना
बाली सुग्रीवाय इर्ष्यति।
बाली सुग्रीव से ईर्ष्या करता है।

८.असूय - निंदा करना
दुर्योधनः पांडवेभ्यः असुयति।
दुर्योधन पांडवों की निंदा करता है।

क्रमशः

- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

मेरे पास वस्त्र कहां हैं?

हैदराबाद का सत्याग्रह जोरों पर था। स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ही फील्ड मार्शल थे, जिस कुशलता से इस सेनानी ने इस युद्ध का संचालन किया, उसका उदाहरण मिलना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। एक बार सत्याग्रह शिविर में कुछ सत्याग्रही वस्त्रों की माँग लेकर शिविर के प्रबन्धकों से झगड़ने लगे। जब बात न सुलझी तो ला. ज्ञानचन्द आदि ने यह समस्या स्वामीजी के सामने लाकर रख दी।

आपने कहा, ''वस्त्र माँगने वाले को मेरे पास भेज दीजिए।'' वे लोग आ गये। स्वामीजी कौपीन लगाये आसन पर बैठे थे। पूछा कैसे आये ? उनमें से किसी ने कहा, वस्त्र चाहिएँ। स्वामीजी ने कहा, मैं कौपीन लगाये बैठा हूँ। मैंने वस्त्र तज दिये हैं। मेरे पास तो हैं नहीं। यह उत्तर पाकर सब लोग शान्त होकर लौट गये।

आर्यसमाज के सब नेता जो वहाँ थे, स्वामीजी महाराज की सूझ पर चकित हो गये। स्मरण रहे कि श्री स्वामीजी ने सत्याग्रह के दिनों में चारपाई पर सोना और जूता पहनना छोड़ दिया था। क्षौर करवाना बन्द कर दिया था। वही भोजन लेते थे जो जेल में आर्यवीरों को मिलता था। अब वस्त्र भी त्याग दिये। उनकी इस साधना का यह फल था कि आर्यसमाज विश्व के प्रमुख धनियों में से एक निजाम उस्मान को चित्त कर पाया।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।
'मोपला'
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष: 23360150, 9540040339

आर्य समाज हनुमान रोड का 94वॉं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज हनुमान रोड का 94वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 9 से 13 नवम्बर के मध्य सोल्लास सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यजुर्वेद पारायण यज्ञ से हुआ यज्ञ ब्रह्मा स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती एवं ऋत्विक डॉ. कर्ण देव शास्त्री रहे। वेद पाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। श्री भानुप्रताप शास्त्री ने अपने सुमधुर भजनों से समां बांध दी। रतन लाल सहदेव भाषण प्रतियोगिता व स्वामी जी की अध्यक्षता में राष्ट्र को महर्षि दयानन्द की देन विषय पर दिल्ली के स्कूलों एवं गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं द्वारा आयोजन किया गया। आचार्य पुनीत शास्त्री ने युवा पीढ़ी में आर्य समाज के सिद्धान्तों का पुनर्जागरण कैसे हो एवं जे.एन.यू. से पधारे डॉ. सुधीर कुमार आर्य ने जीवन में संस्कारों का क्या महत्व है पर सारगर्भित भाषण दिया। कार्यक्रम समापन पर मंत्री दयानन्द जी ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी को साधुवाद किया।

-क. रवि वर्मा , प्रधान

आर्य समाज भरुआ सुमेरपुर नगर का 40वॉं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज भरुआ सुमेरपुर नगर (उ.प्र.) का 40वां वार्षिकोत्सव दिनांक 11 से 14 नवम्बर 2016 के मध्य हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में 27 यज्ञ वेदियों पर 108 यजमान दम्पत्तियों द्वारा आहुतियां दी गयीं। आर्य समाज का यह कार्यक्रम रामलीला मैदान भरुआ सुमेरपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ नगर पंचायत की अधिशासी अधिकारी (सी.ओ.) कुमारी नीतू सिंह ने यज्ञ की यजमान बनकर और ओम पताका फहराकर किया। इस अवसर पर खडेश्वरी विद्या मन्दिर स्कूल के छात्र-छात्राओं ने शोभायात्रा निकाली। श्री बृज किशोर यादव प्रधान आर्य समाज ने समस्त विद्वानों कार्यकर्ताओं का धन्यवाद किया।

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् का
वार्षिकोत्सव समारोह

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद (म.प्र.) का वार्षिकोत्सव 9 से 11 दिसम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत ऋग्वेद पारायण महायज्ञ, योग प्रशिक्षण, नवनिर्मित कार्यालय कक्ष का उद्घाटन एवं विद्वानों का विशेष उद्बोधन होगा।

-आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, सचिव

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज आदर्श नगर

प्रधान -श्री रविन्द्र कुमार बत्रा
मन्त्री - प्रवीण बत्रा
कोषाध्यक्ष - श्री देवेन्द्र जाबा

आर्यसमाज घौंडा, दिल्ली

प्रधान - श्री श्यामसुन्दर शर्मा
मन्त्री - श्री श्याम सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष -श्री लक्खी बाबू शर्मा

आर्य समाज बुढ़ानाद्वार, मेरठ

प्रधान -श्री दिव्येश गुप्त
मन्त्री -श्री अशोक सुधाकर
कोषाध्यक्ष -श्री प्रदीप सिंघल

आर्य समाज घोड़वाड़ी, जिला बीदर (कर्नाटक)

प्रधान - श्री शिवाजीराम आर्य
मन्त्री - श्री ऊधवराव आर्य
कोषाध्यक्ष - तानाजी आर्य

डॉ. सुदर्शन देव जी वेदांग पुरस्कार से सम्मानित

आर्य जगत के युवा वैदिक विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, ओड़िया भाषा की अनेक पुस्तकों के सम्पादक एवं लेखक, भारत स्वाभिवान ट्रस्ट ओड़िशा प्रदेश के संगठन मन्त्री गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि. नुआपाड़ा के सफल संचालक आचार्य डॉ. सुदर्शन देव जी को परोपकारिणी सभा ऋषि उद्यान अजमेर में 133वां महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह 4 से 6 नवम्बर 2016 के अवसर पर डॉ. प्रियव्रतदास वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया गया। **-दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य**

महिला आर्य समाज मानसरोवर का
22वॉं स्थापना दिवस सम्पन्न

महिला आर्य समाज मानसरोवर जयपुर का 22वाँ स्थापना दिवस 10 से 13 नवम्बर 2016 के मध्य अथर्ववेद पारायण यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ ब्रह्मा महात्मा चैतन्य मुनि (सुन्दरनगर) एवं मां सत्य प्रिय यति, उधमपुर (जम्मू कश्मीर) रहे। इस अवसर वर वेदपाठ श्रीमती स्मृति आर्या (दिल्ली) एवं श्रीमती श्रुति आर्या(जयपुर) ने किया तथा मंच संयोजन डॉ. सुमित्रा आर्या ने कया। आचार्य उषबुद्धि जी एवं आचार्य चैतन्य मुनि ने प्रभावशाली प्रवचन कहे। दिल्ली के युवा भजनोपदेशक श्री अंकित उपाध्याय, श्री जवाहर लाल वधवा, श्रीमती सुधा मित्तल एवं विनोद मेहरा जी ने भजनों की अमृत वर्षा की। समाज प्रधाना श्रीमती सरोज कालरा ने विद्ववानों एवं आचार्यो को सम्मानित किया।

-ईश्वर दयाल माथुर, उपप्रधान

पृष्ठ 6 का शेष

उत्तर-पूर्वांचल विशाल जनजाति ....

वैसे पिछली जनता सरकार के समय जब लालकृष्ण आडवाणी गृह मंत्री थे तभी से केन्द्र सरकार की मदद से राज्य सरकार हर विद्यालय सरकारी व गैर सरकारी में एक हिन्दी अध्यापक का वेतन अलग से देती है।

इस अवसर पर 94 वर्षीय महाशय धर्मपाल जी (एमडीएच मसाले के चुनरी साफे वाले) ने कहा कि ''30 वर्षो से अधिक टी.वी पर आने से लोग सोचते हैं कि बाबा जिन्दा भी हैं या नहीं। पर ऐसी विषम स्थिति में किये जा रहे सेवा कार्यों में आने से मेरी आयु बढ़ जाती है और मैं पुन: जवान हो जाता हूं।''

इस विद्यालय की स्थापना श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री ने 50 वर्ष पूर्व की थी। दिल्ली से श्री अवस्थी जी, श्री जैन साहब ने प्रिंसिपल के रूप में आकर इसका संचालन किया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काम कर रहे तथा इस कार्यक्रम में स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवायें दे रहे पूर्व छात्र जर्फु रहमान ने बताया कि पहले यह विद्यालय बोर्ड का केन्द्र था। 1000 विद्यार्थी थे, आसपास और कोई स्कूल नहीं था। मेरी बहन मुमताज बेगम पास में स्कूल था इसी वजह से पढ़ सकी और आज वे गुवाहाटी हाईकोर्ट में वकालत कर रही हैं। एक सेना के मेजर यहां से निकल रहे थे वे बोले मैं इस विद्यालय में रहकर पढ़ा तभी जमाल हुसैन ने बताया कि मेरी बहन सुलताना बेगम भी इसी विद्यालय में पढ़ीं और आज वे गुवाहाटी हाईकोर्ट में वकील हैं।

इसके पूर्व पास ही के आसाम में कार्बो जनजाति के कार्बी लोग स्वायत्तशासी बोकाजान में एक वैदिक विद्यालय में छात्रावास भवन का शिलान्यास समारोह पूर्वक महाशय धर्मपाल जी ने किया।

इस अवसर पर आर्य नेता श्री दीनदयाल जी गुप्ता (अध्यक्ष डालर बनियान), श्री धनपाल आर्य, श्री प्रकाशचन्द्र आर्य, श्रीमती उषा किरण आर्य भी मंच पर विराजित थीं। सम्पूर्ण कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक थे श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, विनय आर्य, श्री जीववर्धन शास्त्री, श्री दयासागर शास्त्री, श्री डॉ. रमाशंकर शिरोमणी व सन्तोष आर्य।

भवन के उद्घाटन के बाद अगले दिन शाम को भारत विकास परिषद शाखा की बैठक थी अत: मैं सबेरे कोहिमा पर्यटन के लिये निकल गया। दीमापुर से बाहर नागालैण्ड में प्रवेश अनुपत्र पत्र (विदेश हेतु वीजा बनाने के तरह) बनाना था जो उसी दिन समय कम होने से न बन सका, पर राज्यपाल का आमंत्रण तथा गाड़ी पर ओ3म् का झंडा लगने तथा राजस्थान निवासी डीजीपी जिन्होंने उद्घाटन अवसर पर हवन में मेरे साथ आहुति दी थीं के फोन के कारण हमारी गाड़ी को चेकिंग पर किसी ने पूछा नहीं। कोहिमा का रास्ता बड़ा घुमावदार है। 76 किमी. में रोड अच्छा होने के बावजूद 4-5 घंटे लग जाते हैं। यह शिमला जैसा पहाड़ी पर सुन्दर बसा हुआ शहर है। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय म्यांमार से जापानी सैनिकों ने बड़ी संख्या में अंग्रेज, मुसलमान और हिन्दु सैनिकों को मारा था। उनकी स्मृति में अंग्रेजों ने सुन्दर वार मेमोरियल गार्डन बनाया जिसकी अभी भी अच्छी साल सम्हाल की जाती है। यहां नागालैण्ड शिक्षा बोर्ड ऑफिस के पास जनजाति संस्कृति का परिचय देना अच्छा म्यूजियम है तथा 13 कि.मी. दूर इम्फाल मार्ग पर शिल्प ग्राम की तरह दिसम्बर में मनाये जाने वाले नागा महोत्सव हेतु विभिन्न 14-16 नागा कबीलों के झोपड़े स्टॉल बनाये जा रहे थे। एक खुला रंगमंच भी है। वापस दीमापुर आया। इस बार बाजार देर तक खुले थे। वाहनों की संख्या बहुत बढ़ गई थी जिससे जाम लग रहा था तथा प्रदूषण बढ़ने से कई चेहरे मास्क लगाये भी दिख रहे थे। एक मन्दिर भी दिखा तथा उसमें सुन्दरकाण्ड का पाठ होते देख लगा कि देश के साथ नागालैण्ड भी बदल रहा है। बाजार में तथा रास्ते में सेना की चौकसी भी पहले के मुकाबले कम थी। सुपर बाजार कहे जाने वाले बाजार में मृत सुखे हुए मेंढक, मछली, कुत्ते, पिल्ले व गौ मांस, दालों व सब्जियों के साथ बिकता हुआ पहले जैसा ही दिखा।

भारत विकास परिषद की बैठक भी उसी होटल में थी जिसमें मैं ठहरा था और मैंने अपने कमरे में बाइबिल देखी थी।

यह होटल परिषद के सदस्य तथा बीजेपी के कार्यकर्त्ता प्रदीप यादव का था। उन्होंने वहां व्यापार करने के लिये नागा महिला से विवाह किया था। कश्मीर की धारा 370 की तरह नागालैण्ड में भी स्थायी रूप से बसने व सम्पत्ति खरीदने का अधिकार आम भारतीय को नहीं है। बाइबिल ही रखना गीता नहीं यह भी प्रदीप जी की मजबूरी थी। आर्यसमाज का एक और रानी गाईदिल्यू वैदिक गुरुकुलम् अजाई लौंग , जिला-पेरेन, नागालैण्ड में था, जिसे श्री आचार्य अमित कुमार जी चलाते हैं। देखने की बहुत इच्छा होते हुए भी पहाड़ी रास्ते पर स्वयं के वाहन से पूरा दिन वहां जाने में लगता है यह जानकर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाया ।

इस विषम भौगोलिक परिस्थिति में खतरों के मध्य वैदिक संस्कृति का प्रचार और सेवा कार्य कर रहे अनेकों अनाम कार्यकर्ताओं का वन्दन।

नागालैण्ड में बी.जे.पी. समर्थित तथा आसाम में बी.जे.पी. सरकारें भले ही बन गई हैं पर सब अच्छा हो गया है, ऐसा नहीं है। क्योंकि भले ही मुख्यमंत्री और राज्यपाल दीमापुर कार्यक्रम में आये हों पर आतंकवाद का साया अभी भी कायम है।

विडम्बना तो यह है कि इस डी.वी.एन. स्कूल अधिकतर ईसाई नागाओं के बालक ही पढ़ते हैं क्योंकि 150 वर्षो से लगातार किये जाने वाले धर्म परिवर्तन के कारण जनता इसाई बाहुल हो चुकी है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि बदलाव की लहर शुरु हुई है पर अभी मुख्यधारा में मिलने का बहुत लम्बा रास्ता तय करना बाकी है। पैसा और कार्यकर्त्ता बड़ी संख्या में उत्तर-पूर्व मांग रहा है नहीं तो वह भारत से आजादी मांगता रहेगा।

- रातीतलाई, मुख्यमार्ग, बांसवाड़ा (राज.) मो.9414101295

पृष्ठ 7 का शेष

विराट जनजातीय वैदिक .....

ने भी अपनी बात कहते हुए सबके सहयोग से भवन बनाने की घोषणा की। यह भवन भी भव्य एवं विशाल बनेगा जिसमें दूर दराज ग्रामीण क्षेत्र के बालक रहेंगे व शिक्षा ग्रहण करेंगे।

इस अवसर पर दयानन्द सेवाश्रम संघ नॉर्थ ईस्ट के उप प्रधान श्री शत्रुघ्न लाल आर्य ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

राज्यपाल महोदय ने 40 मिनट के सारगर्भित सनातन संस्कृति के पोषक व्याख्यान ने सबको प्रभावित किया। आपने अपने उद्बोधन मानवीय विसंगतियों, भेदभाव की भावना को दूर करने, उसके सहायक बनने को कहा। समाज द्वारा घोषणा इस क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार प्रसार के लिए बहुत सार्थक सिद्ध होगी।

अन्य महानुभावों से एक निवेदन है हमें अपनी मिशनरी भावना को संजोना होगा। जो स्वस्थ है वहां जाकर अपने ज्ञान व विचारों से इस मिशन के लिए सेवा करने का संकल्प लेकर अपनी अनूकूलता के अनुसार वहां के लिए समय देने की घोषणा करनी चाहिए। वहां उनके रहने, भोजन, आने-जाने की अच्छी व्यवस्था रहेगी। इस हेतु अपना समय दान हकीकत जानकर ही उनके आयोजन के महत्त्व को समझा जा सकता है। लगभग प्रत्येक देश में इन आयोजनों से एक ऊर्जा मिली है। संगठन बढ़ा है अपने देश के अतिरिक्त अन्य देशों के द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भी आना-जाना प्रारम्भ हुआ है। यह संगठन के लिए शुभ संकेत हैं।

नेपाल जैसे देश में असंभव को संभव ही नहीं एक ऐतिहासिक कार्यक्रम बना कर आर्यों ने नया अध्याय जोड़ दिया, जिससे आर्य जगत के अतिरिक्त समस्त सनातन धर्मियों (हिन्दुओं) में नई चेतना आयी।

इसी प्रकार केरल में जिसकी कोई सहयोग, सहारे, सद्भाव की आवश्यकता है कार्यकर्ता की जो इसके लिए समय दे रहे हैं, दान दे रहे हैं, उन्हें समस्त आर्यजनों के संबल, सुझाव व सहानुभूति की आवश्यकता है। निराशा भाव छोड़िए समय करवट ले रहा है, पंचकुला में बनने वाला विश्व स्तर का वैदिक केन्द्र एक नए युग को दिशा देगा।

इस समय ऐसे ही रचनात्मक कार्यों के आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य जनसमूह के मध्य करने की आवश्यकता है तथा सनातन संस्कृति की रक्षा व विस्तार संभव है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य को भी पधारना था उनकी ही अध्यक्षता में यह सम्पूर्ण कार्य होना निश्चित था किन्तु स्वास्थ्य ठीक नहीं होने से वे वहां नहीं पहुंच पाए, और दूरभाष से सम्पर्क कर सारी जानकारी वे प्राप्त करते रहे, कार्यक्रम में उनके उपस्थित नहीं होने से एक बड़ी कमी खलती रही। इत्योम्

हमारा निवेदन "आपसी दूरियां घटाओ, आर्य समाज बढ़ाओ।"

-प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्व. सभा

आर्यसमाज के शिक्षा कार्यों में वृद्धि : पूर्वोत्तर क्षेत्र में राष्ट्रीय एकता के लिए महत्वपूर्ण कदम

विद्यालय के माध्यम से इस पूरे क्षेत्र मे अत्याधुनिक शिक्षा एवं प्राचीन वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत होंगे बच्चे : विद्यालय की सुन्दर व्यवस्था के लिए हर प्रयास होगा - महाशय धर्मपाल, प्रधान, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

अज्ञानतावश उपेक्षित समाज के उस वर्ग को साथ में जोड़ने से ही यह देश एक सुदृढ़ देश बनेगा।

अन्त में महाशय धर्मपालजी ने आशीर्वचन दिए। सफल संचालन श्री विनय आर्य ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय व बाहर से पधारे हजारों श्रोतागण दयानन्द सेवाश्रम के इस आयोजन को जहां सराह रहे थे वहीं सहयोग की भी भावना बन रही थी। उन्होंने इस छात्रावास व विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए एक मिनी बस प्रदान करने की घोषणा की। उपस्थित जन समूह ने अभिवादन किया।

कहते हैं सत्य पथ पर चलने वालों की और निष्काम कर्म करने वालों की परमात्मा पूर्ण सहायता करता है, वह इस कार्यक्रम में सिद्ध हुआ। वहां जाकर जब वहां की आवश्यकताओं को आर्यजनों ने देखा तो उस अभाव व अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को समझा। एक चेतना और प्रेरणा का संचार उनकी आत्मा में भी हुआ और सहयोग के लिए दिल खोलकर मुक्त हस्त से दान की घोषणाएं होने लगी।

श्री मनोज गुलाटी ने धनश्री में अपनी ओर से एक कन्या छात्रावास बनाने की घोषणा की। श्री रामकृष्ण जी तनेजा एवं धर्मपत्नी श्रीमती कृष्णा तनेजा ने भी एक छात्रावास बनाने की घोषणा की। श्रीमती अंजली कपूर ने एक लाख रुपया, श्री राजपाल पोपली व श्रीमती उर्मिला पोपली ने एक लाख रुपये, श्रीमती आदर्श भसीन ने एक लाख रुपये, श्रीमती सुधा गर्ग ने 51,000/- व जनकपुरी आर्य समाज सी ब्लाक की ओर से 11000/- रुपये , तथा अन्य अनेक महानुभावों ने सहयोग प्रदान करने घोषणा की।

समय दान की घोषणा : इस दान का अपना बहुत महत्त्व है इसके साथ-साथ कुछ घोषणा समय दान की भी की गई। इसमें वर्ष में किसी ने एक माह, किसी ने 15 दिन का समय देकर आदिवासी परिवारों से सम्पर्क बढ़ाने तथा विद्यार्थियों को आकर शिक्षा व अन्य व्यावहारिक ज्ञान, सामान्य ज्ञान आदि देने की भावना से यहां रहेंगे।

धनश्री में निर्मित विशाल भवन में विद्यालय, छात्रावास, सुविधायुक्त अतिथिकक्ष निर्मित किए गए हैं। यह

शिक्षा यज्ञ से यह क्षेत्र पुनः वेदभूमि बनेगा, ऐसा हमारा विश्वास है - *आचार्य सनत् कुमार*

संकल्प श्री जागेन्द्र खट्टर जी को (9810040982) पर अथवा आर्य समाज 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 पर लिखित में भेज सकते हैं।

हिन्दू सेवा समिति दीमापुर की ओर से नगर में एक भव्य स्वागत समारोह दुर्गा मन्दिर में आयोजित किया गया था जिसमें मुख्य रूप से महाशय धर्मपाल जी का और साथ में अन्य आर्यजनों का भी स्वागत किया, सभी के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। अग्रवाल समाज, ब्राह्मण समाज, बंगाली समाज, आर एस एस के सदस्य, सिक्ख समाज आदि अनेक संस्थाओं द्वारा स्वागत किया गया तथा आर्य समाज के कार्य को सराहते हुए सहयोग की भावना व्यक्त की।

इस 3 दिवसीय आयोजन से नागा लैण्ड और असम को एक नई चेतना सनातन धर्मियों में संगठन, स्वधर्म के प्रति चेतना का प्रवाह हुआ। कोई कुछ भी कहे, कहता रहे, फोटो और समाचार पत्रों से छवि बनाने में लगा रहे, उन सबकी चिन्ता किए बिना ऋषि के कुछ-कुछ अनुयायी निरन्तर वैदिक धर्म पताका थामें अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं।

विदेशों में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कल्पना भी नहीं कर सकता है, वेद प्रचारक प्रशिक्षण का वहां केन्द्र बनाकर बहुत बड़ा कार्य हुआ। विश्व स्तरीय वैदिक अनुसंधान व प्रशिक्षण की दृष्टि से करोड़ों की लागत से प्रारम्भ होने वाला प्रकल्प संगठन को वह गति देगा जिसके विकास की कल्पना आज हम कर रहे हैं।

निराशा के दौर से गुजरता संगठन एक उज्ज्वल प्रगतिशील उत्साह से पूर्ण पथ पर चलने लगा है। इसकी गति और

झापराजान के छात्रावास का नव निर्माण संकल्प लिया तनेजा परिवार ने

यदि किसी महानुभाव का नाम लिखने में कोई गलती हो गई हो तो अग्रिम रूप से क्षमा प्रार्थी हैं सूचना प्राप्त होने पर उसमें सुधार किया जा सकेगा।

- सम्पादक

दीमापुर हवाई अड्डे पर अतिथियों का भव्य स्वागत

दयानन्द सेवाश्रम संघ बोकाजान के वार्षिकोत्सव समारोह के अवसर पर द्वार पर स्वागत पारम्परिक वेशभूषा के साथ

वार्षिकोत्सव समारोह में मंचस्थ अधिकारी, अतिथिगण एवं उद्बोधन

उद्बोधन देते महाशय धर्मपाल जी

श्री एस. पी. सिंह जी

आचार्य दयासागर जी

आचार्य सनत् कुमार जी

श्रीमती उषा किरण आर्या

श्री विनय आर्य

श्री जोगेन्द्र खट्टर

दुर्गा मन्दिर समिति द्वारा आर्यनेताओं का स्वागत एवं सम्मान समारोह

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२०१५-१७
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक ८/९ दिसम्बर, २०१६
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२०१५-१७
आर. एन. नं. ३२३८७/७७ प्रकाशन तिथिः बुधवार ७ दिसम्बर, २०१६

यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते महामहिम राज्यपाल श्री पी.बी. आचार्य एवं श्रीमती कवीता आचार्या

मंचासीन महाशय जी, महामहिम राज्यपाल पी.बी. आचार्य श्रीमती कवीता आचार्या शिक्षामन्त्री श्री यिटाचु, श्री दीनदयाल गुप्त जी एवं श्री धर्मपाल आर्य

राज्यपाल महामहिम पी.बी. आचार्य की अगुवानी करते श्री जोगेन्द्र खट्टर एवं आचार्य दयासागर जी

विद्यालय के द्वार पर कार्यकर्ताओं एवं अतिथियों के साथ महाशय धर्मपाल जी

कार्यकर्ताओं के साथ मुख्यमन्त्री श्री टी. आर. जेलिआंग

राज्यपाल पी. बी. आचार्य को स्मृति चिहन प्रदान करते महाशय जी साथ में हैं आचार्य दयासागर, नीरज आर्य एवं श्री मनोज गुलाटी

मुख्यमन्त्री टी. आर. जेलिआंग का स्वागत एवं स्मृति चिह्न भेंट

नया छात्रवास बनाने की घोषणा करने पर श्री रामकृष्ण तनेजा जी का सत्पनीक स्वागत

शिक्षामन्त्री श्री यिटाचु का स्वागत करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी

शिक्षामन्त्री को स्मृति चिह्न भेंट करते श्री रमाशंकर शिरोमणि एवं आचार्य जीववर्धन

महामहिम राज्यपाल का स्वागत करते श्री दीनदयाल गुप्त जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-२९/२, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-१, नई दिल्ली-२८ से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-१; फोन : २३३६०१५०; २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह